Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

लोकप्रिय संस्कृति और प्रर्दशन कला के अंर्तगत रंगमंच में संगीत का योगदान

Anamika Sagar

Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore, Madhya Pradesh

सार संक्षेपिका

रंगमंच, आधुनिक बोलचाल में इसे थिएटर के नाम से अधिक जाना जाता है। रंग अर्थात नृत्य, नाट्य, संगीत जो एक ही मंच पर किया जाता है वह स्थान रंगमंच कहा जाता है। भारत में रंगमंच और संगीत का संबंध अत्यंत प्रगाढ़ रहा है। आज भारतीय रंगमंच अपने अनेक वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण कर चुका है। इस लंबी यात्रा के दौरान इसने कई अच्छे और बुरे पड़ावों को पार किया है और आज वर्तमान स्वरूप में हमारे सामने है। रंगमंच द्वारा यहाँ तक की इस यात्रा को सफलतापूर्वक तय कर पाने में एक जो महत्वपूर्ण और आधारभूत कारक है वह है इनमें गीत संगीत का समावेश और समायोजन होना। हिन्दी रंगमंच ने अपने दर्शकों को एक अच्छा श्रोता भी बनाया है। हिन्दी रंगमंच ना केवल भारतवर्ष में अपितु विश्व के अनेक देशों में भी लोकप्रिय है।

बीज शब्दः कुंजड़ी–मल्हार, चम्बा का भट्ट वंश।

प्रस्तावना

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।

नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते।।

अर्थातः– ऐसा कोई ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग (सम्मिश्रण) तथा कर्म नहीं है, जो नाट्य में न हो।

रंगमंच, आधुनिक बोलचाल में इसे थिएटर के नाम से अधिक जाना जाता है। रंग अर्थात नृत्य, नाट्य, संगीत जो एक ही मंच पर किया जाता है वह स्थान रंगमंच कहा जाता है। पश्चिमी देशों में इसे थिएटर या ऑपेरा कहा जाता है। रंगमंच दो शब्दों से मिलकर बना है (रंग+मंच)।

दर्शकों के बैठने के स्थान को प्रेक्षागार और रंगमंच सहित पूरे भवन को प्रेक्षाग्रह, रंगशाला या नाट्यशाला या नृत्यशाला भी कहते हैं। अंग्रेजी में रंगमंच को थिएटर और स्टेज कहते है। रंगमंच की परिभाषा अलग–अलग विद्वानों द्वारा की गई है। साहित्यों में रंगमंच की परिभाषाएं निरंतर बदलती रहती हैं।

रंगमंच शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है कि मंचित दृश्य को दृश्य के माध्यम से मंच पर मंचित किया जाता है। अनेक प्रदर्शनकारी कलाएँ रंगमंच में समाहित हैं। रंगमंच अपने आप में संपूर्ण अनुभव है, इसमें मुख–मुद्राएँ, शारीरिक गतिविधियों के साथ–साथ नृत्य और संगीत भी शैलीबद्ध तरीके से अनिवार्य रूप से जुड़े हैं।

रंगमंच की परंपरा आदिकाल से चली आ रही है, अभिनव के रचनाओं में भी विस्तार से रंगमंच का उल्लेख मिलता है। रंगमंच ने समय के साथ–साथ अपने विषय वस्तु में बदलाव किया है यह बदलाव हमें साहित्यकारों और कवियों की रचना में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। रंगमंच निश्चित रूप से प्राचीन है, इसका उल्लेख

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

प्राचीन ग्रंथों में, शास्त्रों में मिलता है। रंगमंच का स्वरूप आरंभ में कैसा था इसको लेकर आज भी मतभेद हैं। भारतीय रंगमंच जैसा कोई रंगमंच नहीं है इसके समकालीन किसी भी रंगमंच का जिक्र नहीं मिलता है।

रंगमंच के प्रकार

रंगमंच को जानने के बाद रंगमंच के स्वरूप और प्रकार को जानना भी आवश्यक है:

(1) पाश्चात्य रंगमंच :– प्राचीन यूनानी रंगमंच, अंग्रेजी रंगमंच, फ्रेंच रंगमंच, रुसी रंगमंच, अमेरिकन रंगमंच, जर्मन रंगमंच, जापानी रंगमंच, इटली का रंगमंच, चीनी रंगमंच

(2) भारत का रंगमंच :– संस्कृत रंगमंच, पारसी रंगमंच, हिन्दी रंगमंच, बंगला रंगमंच, मराठी रंगमंच, लोक रंगमंच

वैसे रंगमंच में अनेक कलाएँ समाहित हैं, रंगमंच वैसे तो अपने आपमें संपूर्ण अनुभव है, इसमें संगीत, नृत्य, अभिनय, कठपुतली, मुखौटा आदि कलाएँ रंगमंच में समाहित हैं। यह विधाएँ अलग–अलग होकर भी एकरुप हैं।

रंग संगीत का परिचय

जिस तरह शास्त्रों में स्वर, लय और ताल में बँधे संगीत को शास्त्रीय संगीत कहते हैं, आम लोगों के द्वारा गाये जाने वाले संगीत को लोक संगीत कहते हैं, उसी प्रकार रंगमंच में उपयोग होने वाले संगीत को रंगमंचीय संगीत या रंग संगीत कहते हैं। वैसे तो रंग संगीत को लेकर अलग–अलग विद्वानों के अलग–अलग मत हैं। कहते हैं ''रंगमंच में अभिनेता द्वारा बोले जाने वाले संवाद ऐसे लगने चाहिए कि वो गा रहा है और गाते समय ये लगना चाहिए कि अभिनेता बोल रहा हो या समझा रहा हो''।

रंग–संगीत का घनिष्ठ संबंध नाट्य से है। रंग–संगीत नाट्य का अंग है। नाटक में अभिनय के साथ गायन, वादन एवं नृत्य को भी स्थान दिया गया है। भारतीय परंपरा तथा शास्त्रों के अनुसार नृत्य के अधिष्ठाता भगवान शंकर हैं। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मा ताल देते हैं, विष्णु मृदंग बजाते हैं। सरस्वती वीणा के तार झंकृत करती हैं। सूर्य एवं चंद्र बाँसुरी बजाते हैं। अप्सराएँ व किन्नरियाँ श्रुतियों का ध्यान रखती हैं और महादेव डमरू बजाते हुए पैर के थिरकन से सभी का साथ देते हैं। नृत्य का उद्‌गम स्थल अभिनय को ही माना जाता है। मनुष्य अपने दैनिक जीवन में जो कुछ क्रियाकलाप करता है– क्रोध, स्नेह, आनंद–शांति आदि भाषा में व्यक्त ना करके मुख के भाव एवं शरीर के विभिन्न मुद्राओं से, अभिनय के माध्यम से मंच पर व्यक्त करता है। नाट्य शास्त्र के अनुसार नाटक का मूल उद्देश्य लोगों में लोक चेतना जागृत करना है। नाटक की कला इतनी विस्तृत है जैसे "पूर्ण ब्रह्मांड" भरत मुनि ने कहा है कि, "तीनों लोकों में ऐसी कोई विद्या या घटना या वस्तु या क्रियाकलाप नहीं है जो नाटक के द्वारा दिखायी ना जा सके। नाटक का एक विशेष पहलू 'रंग–संगीत' है।

"यथा वर्णाद कहते चित्रं न शोभा जननं भवेत।
एवमेव बिना गीतमं नाट्यं रागं न गच्छति।।"

(नाट्य शास्त्र)

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

अर्थात् जिस प्रकार रंग बिना चित्र शोभित नहीं होता, उसी प्रकार बिना संगीत के नाट्य से (राग) भाव की उत्पत्ति नहीं होती है, नाट्य में रंग–संगीत को अनिवार्य उपरंजक माना गया है। संगीत मात्र शोभा जनक ही नहीं होता यह नाट्य का अविभाज्य अंग है।

नाट्य में संगीत के माध्यम से नाटक की कहानी संवाद, अंतर्द्वंद, बाहरी संघर्ष, कोमल–कठोर भाव द्वारा अभिव्यक्त होते है। नाटक में संगीत के माध्यम से ही प्रत्येक चरित्र के मनोभाव और उससे जुड़े कार्यों की अभिव्यक्ति होती है। इस तरह नाट्य में संगीत और नाटकीय प्रभाव से दर्शक मंत्र मुग्ध हो जाते हैं।

- रंग संगीत, संगीत का दूसरा रूप है इसमें भाव पक्ष की प्रधानता होती है।
- संगीत, चित्र कला और साहित्य, रंगमंच की तरह ही होता है।
- रंगमंच में अभिनेता का संगीत में पारंगत होना उतना ही आवश्यक है, जितना किसी जीव के लिए श्वसन क्रिया आवश्यक है।

संसार की प्रत्येक चीज (वस्तु) में संगीत है जैसे घड़ी की एक टिक टिक..... अपनी एक बँधी हुई लय में चलती है, जिससे ताल का आभास होता है। जिस पर हम गीत भी गा सकते हैं और नृर्तन या ततकार भी दुगुन और चौगुन में कर सकते हैं। रंग संगीत, संगीत की ही एक विधा है या यूँ कहिए कि रंग संगीत, संगीत का पुत्र है।

रंगमंच एवं रंग संगीत का उद्गम (समुद्र मंथन)

समुद्र मंथन को सबसे पहला एवं सबसे प्राचीन नाटक माना जाता है जिसका विस्तृत वर्णन विष्णु पुराण, भागवत पुराण तथा महाभारत में मिलता है। इस नाटक का निर्देशन भरत मुनि ने किया, यह एक सत्य घटना पर आधारित नाटक है। इसमें देवता और दानवों के बीच अमृत को लेकर लड़ाई का प्रसंग है जो सबसे बड़ी एवं प्रचलित घटना है। इस नाटक का मंचन भरत ने मुक्त आकाश के नीचे एक बहुत बड़े स्थान में किया जिसमें भरत के 100 पुत्रों, जो कि उनके शिष्य भी थे, ने अभिनय किया 100 पुत्रों में से कुछ पुत्रों ने देवताओं का चरित्र निभाया, कुछ ने दानवों का चरित्र निभाया तथा कुछ संगीत में शामिल हुए। समुद्र मंथन को ''अमृत मंथन'' समवकार के नाम से भी जाना जाता है। समुद्र मंथन आरंभ हुआ और निम्न 14 रत्न निकलना आरंभ हुये।

लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुराधन्वन्तरिश्चन्दमाः।

गावः कामदुहा सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवांगनाः।

अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शंखोमृंत चाम्बुधेः।

रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्यात्सदा मंगलम्।

(1) कालकूट विष (2) कामधेनु (3) ऐरावत हाथी (4) उच्चैःश्रवा अश्व

(5) कौस्तुभ मणि (6) कल्पवृक्ष (7) रम्भा (8) लक्ष्मी

(9) वारूणी मदिरा (10) चन्द्रमा (11) शारंग धनुष (12) पाच्चजन्य शंख

(13) धन्वंतरि वैद्य (14) अमृत

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

समुद्र मंथन में संगीत का वर्णन

समुद्र मंथन जो सबसे प्रचलित घटना है वो बिना संगीत के संभव हो ही नहीं सकती। भरत ने जब इस नाटक का मंचन किया होगा तब भी एक बहुत बड़ी संगीत मण्डली होगी। इसके प्रमाण भरत मुनि के नाट्य शास्त्र में मिलते हैं भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र में चार प्रकार के वाद्य यंत्रों का वर्णन किया है जो उन्होंने समुद्र मंथन नाटक के संगीत में भी उपयोग किये होंगे, वे चार प्रकार के वाद्य यंत्र इस प्रकार हैं :–

(1) अवनद्य वाद्य – पखावज, मृदंग, नगाड़ा

(2) तत वाद्य – वीणा, तानपुरा, (जो वीणा से ही बना)

(3) सुषीर वाद्य – शंख (पाच्चजन्य), बाँसुरी

(4) घन वाद्य – खड़ताल, मंजीरा, घुँघरू, झाँझ, घंटे, घंटी, घड़याल

नगाड़ों का उपयोग युद्ध का वातावरण पैदा करने के लिए किया, मनुहारी क्षणों के लिए बाँसुरी का उपयोग किया, अलग–अलग भाव को प्रकट करने के लिए अलग–अलग वाद्य यंत्रों का उपयोग किया।

माँ सरस्वती वीणा धारणी नृत्य, संगीत, कला, ज्ञान–विधा की अधिष्ठात्री देवी स्वयं इस बात का प्रमाण हैं कि समुद्र मंथन में संगीत के प्रमाण मिलते हैं सरस्वती देवी के अतिरिक्त उनके पुत्र नारद मुनि भी एक संगीतज्ञ थे, जिन्हें संगीत माँ सरस्वती से ही प्राप्त हुआ एवं माँ सरस्वती ने ही नारद मुनि को महती वीणा प्रदान की थी।

समुद्र मंथन में ज्यादा से ज्यादा वाद्य यंत्रों के संगीत से प्रभाव डालने की कोशिश भरत मुनि ने की, उस समय किसी भी प्रकार का तकनीकी साधन नहीं हुआ करता था, जैसे प्रकाश योजना आदि इसलिए संगीत के द्वारा ही इसमें रंग भरे जाते थे।

पहली प्रस्तुति देखने आए विद्वानों में से भगवान महादेव ने सुझाव दिया कि इसमें नृत्य संयोजन भी होना चाहिए, तब भरत ने स्वर्ग लोक से अप्सराओं को बुलाया और इन अभिनेत्रियों से नृत्य करवाया। ये अभिनेत्रियाँ रम्भा, मेनका एवं उर्वशी थीं, इस प्रकार नृत्य आया, गतियाँ आईं।

इस नाटक में युद्ध है, हिंसा है, मार–काट है तो भरत ने इनके अनुसार ही वाद्य यंत्रों का उपयोग किया तथा समस्त देवताओं के सामूहिक प्रयास से यह नाटक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

संगीत एक ही है किन्तु इसके प्रकार कई है जिनमें से रंगमंच का संगीत भी रंगमंच के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण है। रंगमंच के संगीत को रंग संगीत या नाटक का संगीत भी कहा जाता है। रंग संगीत में संगीत के अतिरिक्त ब्रह्माण्ड की समस्त ध्वनियां भी सम्मिलित है। रंग संगीत, संगीत के सभी प्रकारों से अलग है इसमें बच्चे के रुदन को भी संगीत माना जाता है और हृदय की गति, चलना, घड़ी की टिक–टिक आदि को ताल माना जाता है, कहने का तात्पर्य यह है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक उत्पन्न होने वाली प्रत्येक ध्वनि एवं लय संगीत या रंग संगीत कहलाती है। मनुष्य की श्वसन क्रिया भी लय में ही होती है।

संगीत मानवीय भावों की तथा जीवन के अलग–अलग रसों की लयात्मक और तालबद्ध अभिव्यक्ति है। मानव जीवन में संगीत का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यूँ तो संगीत सृष्टि में पहले से ही विद्यमान है और प्रकृति के

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

लयबद्ध नियमन में इसका प्रमाण हम देखते हैं। किसी ताल के समान प्रकृति भी अपने एक निश्चित आवर्तन या चक्र के बाद पुनः अपने उसी प्रारंभिक बिंदु पर अवश्य पहुँचती है जहाँ से उसने अपने इस मौसमी चक्र की शुरुआत की होती है। इसे हम संगीत की भाषा में 'सम' कह सकते हैं। जिस तरह एक तबला वादक प्रदर्शन में पेशकार, कायदे, रेले, परन सहित अलग–अलग लयकारियों का प्रदर्शन करता है और पुनः 'सम' पकड़ते हुए ठेके पर आता है, ठीक इसी तरह प्रकृति भी विभिन्न मौसमों और परिस्थितियों का निर्वहन कर पुनः एक निश्चित बिन्दु पर पहुँचती है।

भारतीय संगीत में राग का एक महत्वपूर्ण स्थान है, भारतीय संगीत रागों पर ही आधारित होता है, भारत में होने वाले रंग मंचीय संगीत में भी रागों का अलग स्थान है, रंग संगीत पर जितने भी विद्वानों ने काम किया है या रंगमंच के लिए जिन लोगों ने संगीत बनाया है, उन सभी का अपना–अपना मत है, कुछ रंग संगीतज्ञ राग को आधार मानकर नाटक में संगीत करते है और कुछ भाव के आधार पर संगीत बनाते है, जिन संगीतज्ञों को शास्त्रीय संगीत का ज्ञान है उनके लिए यह प्रक्रिया अलग ढंग से सम्पन्न होती है, वो रागों को आधार मानकर संगीत का निर्माण करते हैं, धुनें व गीत बनाते हैं, किन्तु जिन रंग संगीतज्ञों को राग रागनी का ज्ञान नहीं है, वे स्वरों भावों तथा स्थिति को आधार मानकर नाटक का संगीत बनाते हैं, जिनमें नाटक का कथानक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रागदारी को जानने से पहले ये समझना जरूरी है कि राग क्या है ?

राग

संगीत शास्त्रों में राग को इस तरह परिभाषित किया गया है :–

''योय ध्वनि विशेषस्तु स्वर वर्ण विभूषित ।

रंजकों रन चित्तनाय् सः रागः कश्यतेः बुधै : ।।

जिसका अर्थ है ऐसी ध्वनि जो विशेष तौर पर पूर्ण रूप से स्वर एवं वर्ण से विभूषित हो तथा जो रंजन कर सके, मनुष्य के चित्त का, उसे राग कहा गया है ।

भारतीय संगीत और रागों के प्रभावों को आत्मसात करते हुए ही भारतीय रंगमंच के संगीतकारों ने रंगमंच में अलग–अलग भाव और परिस्थितियों को मंच पर प्रदर्शित करने के लिए भिन्न–भिन्न रागों का आधार लेकर संगीत रचा जो सीधे जन–मानस के हृदय पटल पर अंकित हुआ और अस्तित्व में आया।

इसका एक बड़ा कारण हिन्दी रंगमंच के गीत रहे हैं और इन गीतों की मधुरता का कारण है इसका शास्त्रीय संगीत पर आधारित होना। इसका शास्त्रीय रागों एवं तालों से जुड़ा होना। हालाँकि हम यह नहीं कह सकते कि हर एक गीत शास्त्रीय रागों व तालों पर आधारित रहा हो, लेकिन अगर हम थोड़ा सा ध्यान करें तो हम यह पाते हैं कि शास्त्रीय रागों व तालों में निबद्ध गीत कहीं न कहीं अधिक मधुर और सुकून दायक होते हैं।

नाट्य कला के प्रदर्शन में कलाकार की प्रत्यक्ष उपस्थिति की आवश्यकता होती है। वैसे तो संगीत श्रव्य कला है। जब संगीत कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करता है तब आनंद की अनुभूति तो अवश्य होती है, परन्तु कला का प्रदर्शन समाप्त होते ही कला वस्तु स्थिर न रहकर नष्ट हो जाती है। इसलिए नाट्य कला के प्रत्येक प्रदर्शन में कलाकार को ही उपस्थित रहकर कला का प्रदर्शन करना पड़ता है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

जीवन के हर क्षेत्र को समझने और उसे अपने साथ लेकर चलाने के लिए जिस तरह इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, भाषा आदि का ज्ञान होना आवश्यक है, उसी तरह खुद को सीखने, सिखाने और आगे बढ़ाने के लिए रंगमंच एक बेहतरीन माध्यम है, रंगमंच दृश्य कला है। इसके व्यापक असर को देखने के लिए हमें रंगमंच और नाटक को अपने जीवन में एक नई ऊँचाई देने की आवश्यकता है, जिससे यह हमारे जीवन को रचनात्मक तरीके से सोचने और उसके सहारे आगे बढ़ने में हमें रास्ता दिखाता रहे।

जब भी हम किसी शैली के नाट्य प्रस्तुतियों की बात करते हैं तो उस प्रस्तुति में संगीत को पृथक करके नहीं देखा जा सकता। संगीत तो प्रकृति के कोने–कोने में बसा है। संगीत संवादों में है, नृत्य में है, चाल–चलन में है। संगीत के बिना कोई भी प्रस्तुति संभव ही नहीं है। हाँ, यह जरूर है कि समयानुसार इसका स्वरूप बदलता गया। चाहे आदिमानव काल हो, चाहे नाट्यशास्त्र हो, चाहे संस्कृत नाटक हो, लोकनाट्य या आधुनिक रंगमंच हो, संगीत हर युग में नाट्यकर्मों का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

जिस तरह शास्त्रीय संगीत में मानव को गात्र वीणा कहा जाता है उसी प्रकार रंग संगीत में कलाकार या अभिनेता ही वाद्य यंत्र होता है जो मंच पर अपनी आवाज तथा शरीर के संचालन से रस उत्पन्न करता है। नाटक में जो संवाद बोले जाते हैं वह भी संगीत है उदाहरणार्थ जब हम आम जीवन में भी बात करते हैं तो किसी ना किसी स्वर पर ही बोलते हैं और भावनाओं के आधार पर ही हमारे स्वरों में परिवर्तन आता है। जब हम किसी से प्रेम से बात करते हैं तो उसका स्वर अलग होता है, किसी से गुस्से में बात करते हैं तो उसका स्वर अलग होता है, किसी को डांटने का स्वर अलग होगा, किसी की चिंता करने का स्वर अलग होगा, किसी को हंसाने का स्वर अलग होगा, इस तरह हम विभिन्न स्वरों का उपयोग अपने दैनिक जीवन में करते हैं और इन्हीं दैनिक जीवन में उपयोग होने वाले स्वर, क्रियाकलाप आदि का उपयोग रंगमंच या नाटक में होता है।

उपसंहार

आज दुनिया भर में संगीत को लेकर प्रयोग किए जा रहे हैं। संगीत आध्यात्मिकता के साथ–साथ वैज्ञानिक भी हो गया है। आज ध्वनि विज्ञान के क्षेत्र में नित नए शोध हो रहे हैं। जिसमें से कई तरह के महत्वपूर्ण तथ्य निकलकर सामने आ रहे हैं।

अगर आप गहराई से देखें तो हम सब कहीं ना कहीं जिंदगी में हर रोज कोई ना कोई किरदार होते हैं और हर पल हमारे हाव–भाव बोलचाल का अंदाज और तमाम घटनाक्रमों के बीच हमारी भूमिका एक नई कहानी करती है। भारतीय रंगमंच की परंपरा बेहद समृद्ध है और यह कहीं न कहीं हमारे जीवन के तमाम पहलुओं को स्वांग के जरिए सामने लाती है। फिल्मों और टेलीविजन के आने के बाद से रंगमंच की दुनिया में हलचल मच गई और इसके अस्तित्व पर सवाल उठाए जाने लगे। लेकिन हर दौर में देश के तमाम हिस्सों में रंगमंच उसी शिद्दत के साथ मौजूद है और रहेगा। इसकी अपनी दुनिया है और अपने दर्शक है। यहाँ भी नए–नए प्रयोग होते रहते हैं और देश भर में लगातार नाटकों का मंचन होता रहता है।

भारत में रंगमंच और संगीत का संबंध अत्यंत प्रगाढ़ रहा है। आज भारतीय रंगमंच अपने अनेक वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण कर चुका है। इस लंबी यात्रा के दौरान इसने कई अच्छे और बुरे पड़ावों को पार किया है और आज वर्तमान स्वरूप में हमारे सामने है। रंगमंच द्वारा यहाँ तक की इस यात्रा को सफलतापूर्वक तय कर

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

पाने में एक जो महत्वपूर्ण और आधारभूत कारक है वह है इनमें गीत संगीत का समावेश और समायोजन होना। हिन्दी रंगमंच ने अपने दर्शकों को एक अच्छा श्रोता भी बनाया है। हिन्दी रंगमंच ना केवल भारतवर्ष में अपितु विश्व के अनेक देशों में भी लोकप्रिय है।

संदर्भ ग्रंथ

डॉ. रामसागर त्रिपाठी – भारतीय नाट्यशास्त्र और रंगमंच, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1978.
भगवत शरण शर्मा, पाश्चात्य संगीत शिक्षा, संगीत कार्यालय, हाथरस, 1977.
शेटडान चेनी, रंगमंच (हिंदी अनुवाद –श्री कृष्णदास) हिंदी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, 1965.
बलवंत गार्गी, रंगमंच, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1968.
गोविंद चातक, रंगमंच :कला और दृष्टि, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988.
प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी/प्रो. कुसुम भूरिया, नाट्यम – संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मप्र.)
निशांत केतु, नाटक और मंच, सीमान्त प्रकाशन, 1989
मुकेश गर्ग, साहित्य और संगीत, खण्ड–2 वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली